9 दक्षिणी गंगा गोदावरी - *काका कालेलकर*

उन्मुखीकरण

कल-कल करतीं नदियाँ सारी,
छम-छम करतीं बूँदें प्यारी।
सर-सर करतीं हवा ये न्यारी,
जन-जन होवें यूँ बलिहारी।।

प्रश्न

1. यहाँ पर किसके बारे में बताया गया है?
2. दक्षिण भारत की कुछ नदियों के नाम बताइए।
3. गोदावरी नदी के बारे में आप क्या जानते हैं?

उद्देश्य

छात्रों को यात्रा-वृत्तांत साहित्यिक विधा का ज्ञान कराते हुए उनमें लेखन करने की प्रवृत्ति का विकास करना, यात्रा-वृत्तांत की भाषा शैली से परिचित कराना और इसके साथ-साथ लेखक काका कालेलकर का परिचय कराते हुए उनकी भाषा व रचना शैली का ज्ञान कराना इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

यात्रा-वृत्तांत यह गद्य की एक प्रमुख विधा है। यात्रा-वृत्तांत पाठ में लेखक किसी दर्शनीय स्थल से संबंधित अपनी यात्रा की अनुभूतियों को रोचक और ज्ञानवर्धक ढंग से प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत पाठ 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' भी श्री काका कालेलकर द्वारा रचित यात्रा-वृत्तांत पाठ है जो उनकी रचना 'सप्त सरिता' से लिया गया है। इसमें लेखक ने गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है।

लेखक परिचय

काका कालेलकर का पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है। उनका जन्म सन् 1885 में और मृत्यु सन् 1991 में हुई। इन्होंने आजीवन गांधीवादी विचारधारा का पालन किया। इन्होंने हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा के माध्यम से हिंदी की खूब सेवा की। वे राज्यसभा के सदस्य भी रह चुके हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *गोदावरी नदी धीर-गंभीर माता और पूर्वजों की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। इसके जल में अमोघ शक्ति है। इसके तट पर अनेक शूरवीरों, तत्व-ज्ञानियों, साधु-संतों, राजनीतिज्ञों और ईश्वर भक्तों ने जन्म लिया है। ऐसी पावन और पवित्र गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य का जो वर्णन काका कालेलकर के द्वारा हुआ है, चलिए इसके बारे में हम जानेंगे।*

चेन्नई से राजमहेंद्री जाते हुए बेजवाड़े से आगे सूर्योदय हुआ। बरसात के दिन थे, इसलिए पूछना ही क्या? जहाँ-तहाँ विविध छटा वाली हरियाली फैल रही थी।

पूर्व की तरफ़ एक नहर रेल की पटरी के किनारे-किनारे बह रही थी। पर किनारा ऊँचा होने के कारण पानी हमें कभी-कभी ही दिख पड़ता। सिर्फ़ तितली की तरह अपने-अपने पाल कतार में खड़ी हुई नौकाओं पर ही हमें नहर का अनुमान करना पड़ता था। बीच-बीच में छोटे-छोटे तालाब भी मिलते। इनमें रंग-बिरंगे बादलों वाला आसमान नहाने के लिए उतरता हुआ दिखाई पड़ता और इससे पानी की गहराई और भी अथाह हो जाती। कहीं-कहीं चंचल कमलों के बीच खामोश खड़े हुए बगुलों को देखकर सवेरे की ठंडी-ठंडी हवा का अभिनंदन करने को मन मचल पड़ता। इस तरह कविता-प्रवाह में बहकर जाते हुए कोव्वूर स्टेशन आ गया। मन में यह उमंग भरी थी कि अब यहाँ से गोदावरी मैया के भी दर्शन होने लगेंगे।

पुल पर से गुज़रते समय दाएँ देखें या बाएँ, हम उसी उधेड़-बुन में थे। पुल आ गया और भागमती गोदावरी का अत्यंत विशाल पाट दिखाई पड़ा। मैंने गंगा, सिंधु, शोणभद्र, ऐरावती- जैसी महानदियों के विशाल प्रवाह भरकर देखे हैं। बेजवाडे में कृष्णा माता के दर्शन पर मैं गर्व करता रहूँगा। लेकिन, राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान-शौकत कुछ निराली ही है।

इस जगह पर मैंने जितने भव्य काव्य का या प्रकृति के ठाट-बाट का अनुभव किया, उतना शायद ही कहीं दूसरी जगह किया हो। पश्चिम की तरफ़ नज़र फैलाई तो दूर-दूर तक पहाड़ियों की श्रेणियाँ नज़र आई। आसमान में बादल घिरे रहने से सूरज की धूप का कहीं नामोनिशान तक न था। बादलों का रंग साँवला होने के कारण गोदावरी के धूलि-धूसरित मटमैले जल की झाँई और भी गहरी हो रही थी। ऊपर की और नीचे की झाँई के कारण इस सारे दृश्य पर वैदिक प्रभाव की शीतल और स्निग्ध सुंदरता छाई हुई थी। और पहाड़ी पर कुछ उतरे हुए धौले-धौले बादल तो बिल्कुल ऋषि-मुनियों जैसे लगते थे। इस सारे दृश्य का वर्णन कैसे किया जा सकता है? यह इतना सारा पानी कहाँ से आता होगा?

1. सूर्योदय के समय प्रकृति का वातावरण कैसा दिखायी देता है?
2. लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा कि राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान शौकत निराली है?

विपत्तियों में से विजय-सहित पार हुआ राष्ट्र जिस तरह वैभव की नयी-नयी छटाएँ दिखलाता है और चारों तरफ़ अपनी समृद्धि फैलाता जाता है, उसी तरह गोदावरी का अखंड प्रवाह पहाड़ों में से निकल कर अपने गौरव को साथ में लिए आता हुआ दिखाई पड़ता है। छोटे-बड़े जहाज़ तो नदी के बच्चे हैं, जो माता के स्वभाव से परिचित होने के कारण उसकी गोद में मनमाना नाचें, खेलें, उछलें और कूदें, तो उन्हें इससे रोकने वाला कौन है? लेकिन बच्चों की उपमा तो इन नावों की अपेक्षा प्रवाह में जहाँ-तहाँ पड़ते हुए भँवरों को देनी चाहिए। कुछ देर दिख पड़े, थोड़ी ही देर में भयानक तूफ़ान का स्वाँग रचा और एक ही पल में खिल-खिलाकर हँस पड़े। ये भँवर न जाने कहाँ से आते और कहाँ चले जाते हैं।

ऐसे लंबे-चौड़े भारी पाट के दरमियान अगर टापू न हों तो इनकी कमी ही रह जाए। गोदावरी के टापू प्रसिद्ध हैं। कई तो पुराने धर्म की तरह जहाँ के तहाँ स्थिर-रूप होकर जमे हुए हैं और कई एक कवि की प्रतिभा की तरह क्षण-क्षण भर में स्थल की नवीनता उत्पन्न कर लेते और नया-नया रूप ग्रहण करते हैं। इन टापुओं में अनासक्त बगुलों को छोड़ और कौन रहने जाए? और जब बगुले चलते हैं तो वे उन पर अपने पैरों के गहरे निशान छोड़े बगैर और जगह कैसे जाएँ? अपने धवल चरित का अनुकरण करने वालों के लिए चरणचिह्नों द्वारा अगर वे दिशा सूचित न करें, तो बगुले ही कैसे?

3. लेखक ने भँवरों को बच्चों की उपमा क्यों दी होगी?
4. गोदावरी नदी के टापुओं की क्या विशेषताएँ हो सकती हैं?

नदी का किनारा यानी मनुष्य की कृतज्ञता का अखंड उत्सव! किनारे पर के सफेद महल और मंदिर और उनके ऊँचे-ऊँचे शिखर ही एक अखंड उपासना है। परंतु इतने ही से काव्य संपूर्ण नहीं हो जाता। इसलिए भक्त लोग नदी की लहरों पर से मंदिरों के घंटा-नाद की लहरों को इस पार से उस पार तक पहुँचाते रहते हैं। संस्कृति के उपासक भारतवासी इस जगह गंगाजल के आधे कलश गोदावरी में उँड़ेलते और फिर गोदावरी के जल से कलश भर कर ले जाते हैं। कितनी भव्य विधि है। कितना पवित्र काव्य है। यह भक्ति-रस तो हृदय में भरा हुआ है और मंदिरों के घंटा-नाद और इस हृदय-नाद को तो पूर्व स्मृति ने ही सुनाया। कानों को तो सिर्फ़ इंजन की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। अतः हम आधुनिक संस्कृति के इस प्रतिनिधि से नफ़रत करना छोड़ दें तो रेल के पहिये का ताल कुछ कम आकर्षक नहीं लगता और पुल पर तो उसका विजय-नाद संक्रामक, दूर-दूर तक फैल जाने वाला होकर ही रहता है।

पुल पर गाड़ी अच्छी तरह चलने के बाद मुझे ख्याल आया कि पूरब की तरफ़ देखना तो छूट ही गया। हमने इस तरफ़ घूम कर देखा तो निराली ही रौनक़ नज़र आई। पश्चिम की तरफ़ गोदावरी जितनी चौड़ी थी, उससे भी ज़्यादा पूरब में थी। उसे कई मार्गों से और उत्तेजित होकर समुद्र में मिलना था। सरित्पति से सरिता मिलने जाए, तब उसे संभ्रम, घबराहट और उत्तेजना तो होगी ही पर, गोदावरी तो धीर-गंभीर माता ही ठहरी। उसका संभ्रम भी उदात्त रूप में ही प्रकट हो सकता है। इस ओर के टापू कुछ और किस्म के थे। उनमें वन-श्री की शोभा पूरी-पूरी खिल रही थी। ब्राह्मणों या किसानों के झोंपड़े इस ओर से दिखाई नहीं पड़ते थे। अगर बहते हुए पानी के हमले के सामने टक्कर लेते इन दो टापुओं में किसी ने ऊँचे महल बनाए होते तो वे दूर से ही दिख पड़ते।

कुदरत ने तो सिर्फ़ ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की विजय पताकाएँ खड़ी कर रखी थी और बाईं ओर राजमहेंद्री और धवलेश्वर का सुखी जन-समाज आनंद मना रहा था। ऐसे दुर्लभ दृश्य के दर्शन से तृप्त होने से पहले ही दाहिनी ओर नदी के किनारे से सटकर मस्ती और अल्हड़पन के साथ बहते हुए काँस की सफ़ेद कलगियों का स्थावर प्रवाह दूर-दूर तक जाता हुआ नज़र आ रहा था। नदी के पानी में उन्माद था, उसमें लहरें न थीं। कलगियों के इस प्रवाह ने हवा के साथ-साथ जो षड्यंत्र रचा था, उससे वह मनमानी हिलोरें उछाल सकता था। कम हो भी क्यों? लेकिन, काँस की कलगियों का प्रवाह तो बहता ही जा रहा था। गोदावरी के प्रवाह के साथ होड़ करते हुए भी उसे संकोच न होता था। और वह संकोच क्यों करें? गोदावरी माता के विशाल तट पर इसने क्या कम स्तन्य-पान किया था?

माता गोदावरी! राम-लक्ष्मण और सीता से लेकर बूढ़े जटायु तक सबको तूने ही स्तन्य-पान कराया है। तेरे तट पर शूरवीर भी पैदा हुए हैं और बड़े-बड़े तत्व-ज्ञानी भी, साधू-संत भी जन्मे, धुरंधर राजनीतिज्ञ भी और ईश्वर-भक्त भी। चारों वर्णों की तू माता है। मेरे पूर्वजों की तू अधिष्ठात्री देवी है। नयी-नयी आशाओं को लेकर मैं तेरे दर्शन के लिए आया हूँ। तेरे जल में अमोघ शक्ति है, तेरे पानी की एक बूँद का सेवन भी व्यर्थ नहीं जाता।

5. लेखक ने रेल के पहिये की आवाज़ को 'संक्रामक' कहा है।'संक्रामक' से लेखक का क्या आशय होगा?
6. गोदावरी को धीर-गंभीर माता की संज्ञा क्यों दी गयी होगी?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लेखक को गोदावरी का जल कैसा लगा होगा?
2. लेखक की जगह तुम होते, तो गोदावरी नदी का वर्णन कैसे करते? बताइए।

(आ) पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

1. लेखक को कोव्वूरु स्टेशन पार करने के बाद गोदावरी मैया के दर्शन हुए। ( )
2. गोदावरी की शान-शौकत कुछ निराली है। ( )
3. उपासक गंगा जल के आधे कलश को गोदावरी में उँडेलते हैं। ( )
4. राजमहेंद्री और धवलेश्वर का सुखी जन-समाज दुखित था। ( )

(इ) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

आचार्य विनोबा भावे का जन्म महाराष्ट्र में हुआ। वे प्रातःकाल बहुत जल्दी उठते थे। प्रतिदिन नियमित रूप से चरखा चलाते थे। बातें कम और काम अधिक करते थे। भूदान आंदोलन विनोबाजी का प्रमुख कार्य था। विनोबाजी ने युवावस्था में ही जनता की सेवा का व्रत लिया था। उनके मन पर गाँधीजी के विचारों का प्रभाव पड़ा। बनारस की सभा में गाँधीजी ने कहा था, ''जब तक देश परतंत्र है, तब तक देश ग़रीब है, ठाट-बाट से रहना पाप है। जब तक देश की जनता दुखी है, आराम से रहना अपराध है।''

1. विनोबाजी के जीवन का प्रमुख कार्य क्या था?

2. बनारस की सभा में गाँधीजी ने क्या कहा?
3. रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।
4. इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(ई) इस अवतरण के मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।

पुल पर से गुज़रते समय दाएँ देखें या बाएँ, हम उसी उधेड़-बुन में थे। पुल आ गया और भागमती गोदावरी का अत्यंत विशाल पाट दिखायी पड़ा। बेजवाड़े में कृष्णा माता के दर्शन पर मैं गर्व करता रहूँगा। गोदावरी की शान शौकत कुछ निराली है।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने अनुभवों को प्रस्तुत कीजिए।
2. आंध्र को अन्नपूर्णा एवं भारत का धान्यागार कहलाने में नदियों का योगदान व्यक्त कीजिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. चेन्नई से राजमहेंद्री जाते समय लेखक की भावनाएँ कैसी थीं?
2. लेखक ने गोदावरी को माता की संज्ञा क्यों दी होगी?

(इ) अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा का वर्णन करते हुए मित्र के नाम पत्र लिखिए।

(ई) इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक का कौनसा अनुभव आपको अच्छा लगा? क्यों?

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. बरसात, सरिता, पहाड़ (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)
2. विजय, प्रसिद्ध, दुर्लभ (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. नहर, तितली, कविता, लहर (वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. सूर्योदय, उन्माद, पवित्र, अत्यंत (संधि विच्छेद कीजिए।)
2. साधु-संत, चरणचिह्न, गंगाजल (समास बताइए।)

(इ) इन्हें समझिए।

1. नदी के पानी में उन्माद था, उसमें लहरें न थीं।
2. गोदावरी के प्रवाह के साथ होड़ करते हुए भी उसे संकोच न होता था।

(ई) नीचे दिये गये क्रिया शब्द समझिए और अकर्मक व सकर्मक क्रियाएँ पहचानिए।

सोना, पढ़ना, पीना, हँसना, कहना, उठना, दौड़ना, खाना, चलना, लिखना

परियोजना कार्य

यात्रा-वृत्तांत विधा की जानकारी प्राप्त कीजिए। उसकी सूची बनाकर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

उपवाचक

अपने स्कूल को एक उपहार

- ऋतु भूषण

अपने पुराने स्कूल में वह एक मेधावी छात्र रहा था। पिछले पाँच वर्ष से वह हर वर्ष, कक्षा में सबसे आगे था। उसे कहानियों की किताबें पढ़ने का शौक़ था। अतः उसकी अंग्रेज़ी और हिंदी बहुत अच्छी थी। उसे सामान्य ज्ञान की पुस्तकें पढ़ना भी बहुत पसंद था और इससे उसका विज्ञान और इतिहास का ज्ञान भी विकसित हो गया। गणित का तो वह जादूगर था ही। अध्यापक के बोर्ड पर पूरा प्रश्न लिखने से पूर्व ही वह उसका उत्तर बताने के लिए अधीर हो हाथ उठा देता।

पुराने स्कूल में उसके बहुत सारे मित्र थे और सभी अध्यापक भी उसे पसंद किया करते थे। वह सब से खुशी-खुशी मिलता और मुस्कुराकर 'हैलो' कहता। जब भी कोई कठिनाई में होता तो राजू सबसे पहले उसकी मदद के लिए पहुँच जाता। उसके पुराने स्कूल में कभी किसी ने उसकी कमज़ोरी की ओर भी ध्यान नहीं दिया-उसकी टांगें बहुत पतली और दुर्बल थीं। उसके घुटनों में शक्ति नहीं थी और अधिक समय तक वे उसके शरीर का भार बर्दाश्त नहीं कर पाती थीं। अतः वह ज़्यादा देर तक खड़ा नहीं रह पाता था इसीलिए उसे खेलने की मनाही थी। जब भी उनके स्कूल में मैच होता, राजू अपने साथियों को खेलते हुए देखता और ज़ोर-शोर से उनका उत्साह बढ़ाता । जब उसके मित्र मैच हारने लगते तो राजू के प्रेरणादायक शब्दों से उनमें आशा का संचार होता और वे नयी स्फूर्ति से खेलने लगते।

सारी रात राजू अपने पुराने स्कूल के विषय में सोचता रहा और उसने सच्चे मन से प्रार्थना की कि उसका नया स्कूल भी उसके पुराने स्कूल जितना ही अच्छा हो। वैसे राजू यह बात भली-भाँति जानता था कि यदि स्वर्ग में भी स्कूल हो तो वह भी उसके पुराने स्कूल से ज़्यादा अच्छे तो नहीं हो सकता। उसके स्कूल छोड़ते समय सभी मित्र कितने रो रहे थे? उसके संगी-साथी,अध्यापकगण और यहाँ तक कि प्रधानाचार्य ने भी उसके पिता जी से उसे वहीं छोड़ जाने का अनुरोध किया था। लेकिन उनकी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया जा सका। उसके पिता जी का तबादला हो गया था और अपने इकलौते बेटे को वहीं पर छोड़ जाने की बात वे सोच भी नहीं सकते थे।

अगले दिन प्रातः राजू जल्दी ही उठ गया और फटाफट उसने अपनी वरदी भी पहन ली। आइने में अपने को देखकर सोचने लगा कि वरदी तो अच्छी लग रही है। हो सकता है कि स्कूल भी अच्छा ही हो। लेकिन फिर भी उससे नाश्ता नहीं किया जा सका। माता-पिता समझ गये और उन्होंने ज़बरदस्ती नहीं की। पिता जी ने अपनी गाड़ी में स्कूल के फाटक तक छोड़ दिया और अपने बेटे को मुस्कुराकर विदा किया।

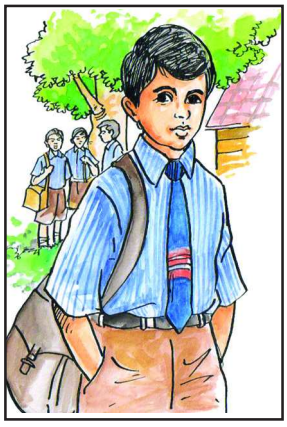

राजू धीरे-धीरे चलने लगा। क्योंकि वह तेज़ नहीं चल सकता था। उसकी मधुर मुस्कान को लोग घूरते रहे और कुछ ने तो उसकी टांगों की ओर संकेत करके हँसते हुए उसका मज़ाक भी उड़ाया।

कुछ क्षणों में ही पूरा मैदान और बरामदे कौतूहल से देखने और उसकी ओर इशारा करके हँसने वालों से भर गये। स्कूल के अध्यापक भी पास से ऐसे गुज़रे जैसे कुछ हो ही नहीं रहा है।

जब पहला पीरियड आरंभ हुआ तो अध्यापक ने राजू को कक्षा में सबसे पीछे बिठा दिया। जब राजू से उसका परिचय पूछा गया तो उसने बताया कि वह एक गाँव के स्कूल से आया है। इस पर छात्रों को हँसी आयी। मधुर स्वभाव वाले राजू ने इसके पहले गुस्से को कभी भी महसूस नहीं किया था। वह स्वयं को यही समझाता रहा कि अभी धैर्य रखने की ज़रूरत है, जल्दी ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन पूरे दिन हर पीरियड में यही व्यवहार दुहराया जाता रहा।

राजू तो किसी अलग ही मिट्टी का बना हुआ था। उसने यह प्रमाणित करने का निश्चय किया था कि गाँवों के स्कूल शहरों के बराबर ही अच्छे होते हैं। उस शाम राजू ने अपने माता-पिता को कुछ नहीं बताया। उनके जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों पर मुस्कुराकर रह गया क्योंकि वह झूठ भी नहीं बोलना चाहता था।

अगला दिन, उससे और अगला, और फिर महीने का हर दिन उसके लिए ऐसा ही रहा। उसकी कक्षा में उसके हाथ उठाने पर भी उसे प्रश्नों का उत्तर नहीं देने दिया गया। उसका कोई मित्र भी नहीं बन पाया था। आधी छुट्टी में जब बाक़ी सभी लड़के खेलने जाते तो वह कक्षा में ही बैठा रहता। अब तक पूरा स्कूल जान गया था कि राजू एक 'गंवार' लड़का है और उसे अपने गाँव के स्कूल का बड़ा 'घमंड' है।

आख़िरकार राजू ने इस स्थिति से निबटने के लिए बड़ी चतुराई से एक योजना बनायी। कक्षा के अध्यापकों द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर उसने हाथ उठाना ही बंद कर दिया। परिणामस्वरूप बहुत शीघ्र ही अध्यापकों और छात्रों ने उस पर ध्यान देना बंद कर दिया। राजू यह जानता था कि एक महीने के बाद उसकी वार्षिक परीक्षा होने वाली है। इसलिए उसने घर पर अधिक परिश्रम किया- आख़िर उसे नये स्कूल के समक्ष प्रमाणित करना था कि उसका पुराना गाँव का स्कूल कोई कम नहीं था।

सबने मान लिया था कि राजू को तो फेल होना ही है। जैसे-जैसे समय पास आता गया, सभी लड़के पढ़ने में व्यस्त होते गये पर राजू को किताबें लिए देखकर उस पर हँसने और मज़ाक उड़ाने का समय फिर भी निकाल ही लेते। राजू अब बहुत धैर्यवान हो गया था और चुपचाप मन में मुस्कुराता हुआ अपनी पढ़ाई करता रहा। एक सप्ताह में ही वार्षिक परीक्षा समाप्त हो गयी। राजू दो सप्ताह की छुट्टी के लिए गाँव वापस गया। उसके बाद ही परीक्षा परिणाम निकलना था।

परिणाम निकलने के पहले दिन राजू लौट आया और अगले दिन पूरे आत्मविश्वास से अपने पिता के साथ परीक्षा-फल देखने गया। एक बार फिर वह कक्षा में प्रथम आया था। उसके पिता जी खुश थे लेकिन राजू के हर्ष की तो सीमा ही नहीं थी। प्रथम आने पर वह इतना प्रसन्न कभी नहीं हुआ था, क्योंकि अब उसने अपने स्कूल को सुंदर और समुचित उपहार समर्पित किया है।

प्रश्न :

1. राजू को उसका पुराना स्कूल कैसा लगता था?
2. राजू के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार कैसा था?
3. राजू ने अपने स्कूल को किस तरह उपहार समर्पित किया?